असम के प्रतिदिन मीडिया ग्रुप के अचीवर्स अवार्ड्स समारोह में संबोधन

1. गुवाहाटी के इस ऐतिहासिक शहर में आप सबके बीच आकर और असम के **'प्रतिदिन मीडिया ग्रुप'** द्वारा शुरू किए गए **'अचीवर अवार्ड'** समारोह में सम्मिलित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है।

2. कामाख्या माता की नगरी गुवाहाटी पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार है। भारत की सबसे चौड़ी नदी ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसे इस शहर को आसपास मौजूद पर्वत श्रृंखला और भी आकर्षक बना देती है।

3. गुवाहाटी एक ओर असम का वाणिज्यिक केंद्र है, वहीं यह राज्य का शैक्षिक केंद्र भी है। मैं भी यहां आकर असम के लोगों के प्रेम और स्नेह से अभिभूत हो गया हूँ।

4. असम की बात करते हुए सबसे पहले असम के पहले मुख्यमंत्री भारत रत्न गोपीनाथ बोरदोलोई की याद आती है। एक विजनरी नेता के रूप में उन्होंने देश के पूर्वोत्तर कोने से एकता की सरिता प्रवाहमान की।

5. आज यहां से मैं पद्म पुरस्कार और फिल्म जगत के सर्वोच्च पुरस्कार दादा साहब फाल्के पुरस्कार से विभूषित स्व. श्री भूपेन हजारिका का भी स्मरण करता हूं।

6. हम सभी जानते हैं कि मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया न केवल लोकतंत्र को मजबूत करता है अपितु यह आम जनता और प्रशासन के बीच एक कड़ी के रूप में भी काम करता है।

7. सदिन प्रतिदिन समूह अपने दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्रों, महिला पत्रिका और लोकप्रिय टीवी चैनल के माध्यम से समाज में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। इस समूह ने असम की सभी जनजातियों और समुदायों को एकजुट करने तथा उनकी समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

8. मैं आज के समारोह में पुरस्कार पाने वाले सभी लोगों को भी बधाई देता हूं। आप सभी ने, कला और संस्कृति, पत्रकारिता और खेल, विज्ञान, समाज सेवा, व्यापार और पर्यावरण जैसे अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से असम और देश को गौरवान्वित किया है।

9. साथियों, हमारे देश में सर्वप्रथम अखबारों का प्रकाशन करीब 240 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ। प्रारंभिक अखबार अंग्रेजी में थे, लेकिन जब देशी और हिंदी भाषा में अखबार छपने लगे तो एक सामाजिक क्रांति

उत्पन्न हुई। इन अखबारों ने अंग्रेजों के जुल्म और स्वतंत्रता सेनानियों के विचारों को जनता के सामने रखने में अहम भूमिका निभाई।

10. यह अखबार भारतीय जनमानस के विवेक और चिंतन को स्पर्श करते थे। दूसरे शब्दों में कहें, तो भारत में अखबारों ने प्रारंभ से ही सामाजिक चेतना जागृत करने का कार्य किया। यही कारण रहा कि पत्रकारिता को हमारे यहां सदैव से ही मिशन की संज्ञा दी गई।

11. महात्मा गांधी से लेकर बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर तक आप किसी भी मनीषी का नाम ले लें, सभी ने स्वयं को किसी न किसी अखबार से न सिर्फ सम्बद्ध किया बल्कि लंबे समय तक उनमें लेखन भी किया।

12. आजादी से पहले समाचार पत्रों ने देशवासियों को स्वयं को मातृभूमि के लिए समर्पित करने की प्रेरणा दी। वहीं आजादी के बाद अखबार देश की प्रगति के पथ प्रदर्शक बने। अखबारों ने सरकारों के कार्यों पर निगरानी की तथा विपक्ष को जागरूक रखने की भूमिका भी बेहद जिम्मेदारी और संजीदगी के साथ निभाई।

13. संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान भी मीडिया की स्वतंत्रता का पूरा ध्यान रखा गया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के माध्यम से प्रेस की स्वतंत्रता भी सुनिश्चित की गई।

14. पिछले 75 वर्षों में जो भी चुनौतियां आईं, मीडिया जगत ने उसका मुखरता से सामना किया तथा जनता के विश्वास और देश के भरोसे को बनाए रखा।

15. लेकिन अब समय के साथ बदलते स्वरूप में मीडिया की स्वरूप और कार्य करने की पद्धति में बदलाव आया है, जिसमें सुधार की आवश्यकता भी जताई जाने लगी है।

16. मीडिया के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वह है अपनी विश्वसनीयता को और मजबूत बनाना। सोशल मीडिया के जमाने में आजकल सूचनाओं का वायरल होना आम बात हो गई है। खबर सही हो या गलत तुरन्त फैल जाती है। इनमें गढ़ी हुई खबरें तथा गलत खबरें भी होती हैं।

17. इन गढ़ी हुई और झूठी खबरों को ही हम फेक न्यूज के नाम से पहचानते हैं। फेक न्यूज का जो मकड़जाल है, उसने आम लोगों को उलझा दिया है और मीडिया की विश्वसनीयता को कसौटी पर ला खड़ा किया है।

18. ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया पूरी तरह नकारात्मक है। इसका उजला पक्ष हमें कोरोना की दूसरी लहर के दौरान देखने को मिला था, जब एक ट्वीट पर या एक फेसबुक पेज पर लोग मदद के लिए उमड़ पड़ते थे।

19. कोरोना के उस चुनौतीपूर्ण समय में सोशल मीडिया लाखों लोगों तक मदद पहुंचने का सहारा बना था। लेकिन उसी दौरान हमें इंफोडेमिक से भी जूझना पड़ा था। इसके बारे में मीडिया के मेरे साथी बेहतर समझते हैं।

20. इसी कारण मैंने कहा कि मीडिया की अपनी विश्वसनीयता को और मजबूत बनाना होगा। हमें अपनी खबरों को इतना प्रामाणिक करना होगा कि हम फेक न्यूज के इस भ्रमजाल को तोड़ सकें।

21. आमजन का मीडिया पर इतना भरोसा होना चाहिए कि जब भी कोई न्यूज सामने आए, वह उस समाचार पत्र या चैनल की वेबसाइट पर जाकर या किसी भी माध्यम से संपर्क कर खबर को चेक और कंफर्म कर सके। जब यह आदर्श स्थिति आ जाएगी तो हम फेक न्यूज को काफी हद तक नियंत्रित करने में सफल हो जाएंगे।

22. यह विश्वसनीयता आप लोगों को ही उत्पन्न करनी है। आपके माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान इस प्रकार हो कि कोई सही और जनोपयोगी सूचना छूटे नहीं और कोई गलत और भ्रामक सूचना आगे बढ़े नहीं।

23. एक और चीज जो मुझे अब मीडिया में अधिक दिखाई देने लगी है जो मुझे चिंतित भी करती है, वह है नकारात्मक खबरों को मिल रही प्रमुखता। निगेटिव समाचार हमारे अखबारों के स्पेस और टीवी चैनलों के स्क्रीन पर अधिक दिखाई देते हैं। इसमें समाज में हो रहे सकारात्मक कार्य और परिवर्तन कहीं पिछड़-से जाते हैं।

24. यदि मैं सदन की कार्यवाही का ही उदाहरण दूं, तो हंगामे को पूरा दिन दिखाया जाता है, सदन में डिबेट नहीं होने पर शाम को प्राइम टाइम में डिबेट भी होते हैं। लेकिन यदि सदन शांतिपूर्ण चले, सदन में विधेयक पर या जनता से जुड़े मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हो, तो वह उतनी प्रमुखता से सामने नहीं आ पाता।

25. यह स्थिति उचित नहीं है। हमें सकारात्मक खबरों को, सकारात्मक विमर्श को अधिक प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इसका अभिप्राय यह कतई नहीं है कि निगेटिव खबरों को दिखाया ही नहीं जाए, परन्तु उनको अनावश्यक विस्तार दिए जाने की प्रवृति पर अंकुश बेहद जरूरी है।

26. साथियों, समाचार पत्रों और मीडिया ने शासन की जवाबदेही और कार्यों में पारदर्शिता को सुनिश्चित किया है। मीडिया अब सामाजिक सरोकारों को भी प्रोत्साहित कर रही है। मीडिया के माध्यम से अच्छे कार्य करने वालों का सम्मान किया जा रहा है।

27. ऐसे सम्मान न केवल पुरस्कार पाने वाली विभूतियों को बढ़ावा देते हैं, अपितु दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन्हें देख कर समाज में एक भावना का निर्माण होगा कि यदि सभी अपने कर्तव्य समर्पण और संकल्प भावना के साथ करेंगे तो हम सामाजिक-आर्थिक बदलाव का मार्ग प्रशस्त करते हुए नए भारत का निर्माण कर सकेंगे।

28. मीडिया सरकार और देश के नागरिकों के बीच एक कड़ी के रूप में काम करता है। जनता मीडिया पर विश्वास करती है क्योंकि यह लोगों को प्रेरणा देने और उन्हें एकजुट करने का कार्य करता है। मुझे विश्वास है कि आप लोगों को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे ।

29. मैं एक बार फिर ''सदिन प्रतिदिन समूह और इसके चेयरमैन श्री जयंत बरूआ जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आमंत्रित किया।

30. मैं आज पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी लोगों और प्रतिदिन संगठन को भी उनके सुखद भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।